CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

शोध-पत्र

Received 11.02.2023 Reviewed 07.03.2023 Accepted 29.03.2023

राजस्थानी संस्कृति में प्रचलित रीति–रिवाजों की शैक्षिक उपयोगिता का अध्ययन

*सुरेन्द्र सिंह
**डॉ. रमा शर्मा

मुख्य शब्द - *राजस्थानी संस्कृति, रीति–रिवाज, सांस्कृतिक तत्व आदि.*

सारांश

रीति–रिवाज किसी भी संस्कृति का प्रतिबिम्ब होता है। राजस्थानी संस्कृति की झलक यहां के रीति–रिवाज में दिखाई पड़ती है। यहां के रीति–रिवाजों से ही राजस्थानी संस्कृति अपनी अलग पहचान दर्शाती है। राजस्थानी संस्कृति में रीति–रिवाज को समाज तथा परिस्थिति के अनुसार बदलाव के साथ देखा जा सकता है, जो स्वीकार्य परम्परा के रूप में देखा जाता है। समय के साथ चलना राजस्थानी संस्कृति की परम्परा है।

रीति–रिवाज ऐसी परम्पराएँ या संस्कार हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी मानव जातियों में चले आये हैं। इनका सम्बंध दैनिक चर्या या जीवन की प्रमुख घटनाओं से होता है। कभी–कभी ये धर्म और त्योंहार का हिस्सा होते हैं।

राजस्थानी संस्कृति में रीति–रिवाजों का शैक्षिक महत्व है। जैसे हमारे बुजुर्ग प्रातः उठकर दोनों हथेलियों को देखते हैं और उनमें ईश्वर का दर्शन करते हैं। धरती पर पैर रखने से पहले धरती मां को प्रणाम करते हैं। ये रीति–रिवाज जीवन को एक दिशा प्रदान करते हैं। व्यक्तित्व का विकास करते हैं। इसलिए इनका पीढ़ी दर पीढ़ी मानव द्वारा अनुशरण किया जाता है।

अध्ययन का महत्त्व

किसी भी देश, प्रदेश या स्थान की संस्कृति का निर्माण बहुत से तत्त्व मिलकर बनाते हैं या प्रभावित होती है। राजस्थानी संस्कृति भी राजस्थान की भौगोलिक स्थिति, प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान काल के राजस्थान की संस्कृति के विकास के इतिहास, राजस्थान की राजनीति के सोपान, राजस्थान की सामाजिक संस्थाएँ, राजस्थानी रहन–सहन, मनोरंजन, राजस्थान में विविध धर्म, शिक्षा और साहित्य, राजस्थान का स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, लोक–संस्कृति आदि में नीहित सांस्कृतिक तत्त्वों से निर्मित हुई। इन निर्माणक तत्त्वों का राजस्थानी संस्कृति को समझने के लिए वर्णन किया जाना अति आवश्यक है। राजस्थानी संस्कृति जहाँ अपनी जीवन प्रणालियों रीति–रिवाजों आदि में निजी विशिष्टिता रखती है, वहीं उसमें अर्न्तनिहित करूणा, प्रेम, मैत्री आदि जीवन मूल्य उसे वृहत्तर मानव संस्कृति से जोड़कर सार्वभौम बनाते हैं। यहाँ धर्म में एक ओर स्थानीय देवताओं की महत्ता है तो दूसरी ओर सनातनी विधियों और जीवन के सोलह संस्कारों का कठोरता से पालन होता है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से राजस्थानी संस्कृति के रीति –रिवाजों में नीहित सांस्कृतिक तत्त्वों की शैक्षिक उपयोगिता की पहचान कर उन्हें पुर्नःस्थापित करने का प्रयास किया गया है। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोध शिक्षा के विकास के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा।

राजस्थान परिवेश की सुगंध से ओतप्रोत राजस्थानी रीति –रिवाजों की अपनी पहचान और शैक्षिक महत्व है। अतः राजस्थानी संस्कृति को समझने में रीति –रिवाजों तथा उनमें नीहित सांस्कृतिक तत्वों का महत्व बहुत अधिक है जिनका अध्ययन राजस्थानी संस्कृति के अध्ययन के लिए आवश्यक है।

अध्ययन का औचित्य

स्थानीय स्तर पर प्रचलित राजस्थानी रीति–रिवाजों का भी अपना एक विशेष शैक्षिक महत्व है। यहां जन्म से लेकर मृत्यू तक अनेक प्रकार के सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यों के सम्पादन में रीति–रिवाजों का विशेष महत्व है।

बोगार्ड के मतानुसार–"संस्कृति समाज के रीतिरिवाजों परम्पराओं और चालू व्यवहार के प्रतिमानो से बनती है। संस्कृति समाज का मूल धन है। वह मूल्यो की ऐसी पूर्ववती रचयिता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति पैदा होता है और विकसित होता है।"[1] पारिवारिक जीवन स्वयं एक संस्था है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त दैनिक कार्य, संस्कार, उत्सव, व्रत, यज्ञ, विवाह, मिलना–जुलना, शोक, हर्ष आदि घटनाएँ परिवार के सदस्यों द्वारा सम्पादित होती है और उन्हें सामाजिक एंव शास्त्रीय विधि–विधान के माध्यम से पूरा किया जाता रहा है। ये परिवार एक पीढ़ी की परम्परा न होकर अगनित पीढ़ियों के सोपान हैं। जो रीतिरिवाजों परम्पराओं के रूप में परिवार से समाज और समाज से राज्य और राज्य से राष्ट्र आदि घटकों का निर्माण होता है तथा उनका सम्बन्ध एक–दूसरे पर अन्योन्याश्रित है और अविभाज्य है। पारिवारिक सम्बन्ध में प्रेम, ऐक्य, सहयोग आदि की भावना नैसर्गिक होती है। अतः राजस्थानी संस्कृति को जानने के लिए यहां के रीति–रिवाजों तथा उनमें नीहित सांस्कृतिक तत्वों को जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः रीति–रिवाजों तथा उनमें नीहित सांस्कृतिक तत्वों का उत्तम तरीके से अन्वेषण करना जरूरी है। इसलिए शोध कार्य हेतु राजस्थानी रीति–रिवाजों तथा उनमें नीहित सांस्कृतिक तत्वों पर शोध सर्वज्ञा प्रासंगिक है।

शोधकर्ता ने इसी भावना से पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन किया और यह पाया कि राजस्थानी संस्कृति में प्रचलित रीति–रिवाजों जिसका मुख्य आधार उसमें निहित मूल्य है। वर्तमान में मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास तथा समाज में मूल्यों के क्षय को रोकने में किस प्रकार सहायक हो सकते है। इसे जानने के लिए राजस्थानी संस्कृति में प्रचलित रीति–रिवाजों तथा उनमें नीहित सांस्कृतिक तत्वों की शैक्षिक उपयोगिता का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

शोधकर्ता ने पाया है कि राजस्थान की संस्कृति पर बहुत शोध कार्य हुआ है। लेकिन राजस्थानी संस्कृति में प्रचलित रीति–रिवाजों तथा उनमें नीहित सांस्कृतिक तत्वों की शैक्षिक उपयोगिता पर पूर्व में कोई विशेष शोध कार्य अभी तक नहीं हुआ है। अतः इस अध्ययन के निमित निष्कर्ष वर्तमान समाज, परिवार व मनुष्य को एक नई दिशा देने में मील का पत्थर साबित होंगे। ऐसा शोधकर्ता का मानना है। यह अध्ययन शैक्षिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि इस क्षेत्र में हुए शोध कार्यो की संख्या काफी सीमित है। यह कार्य एक शैक्षिक नवाचार लक्ष्य पर समाजोपयोगी, परिवारोपयोगी एवं विद्यार्थियों के लिए फलदायी होगा। जिससे हम राजस्थानी संस्कृति में प्रचलित रीति–रिवाजों तथा उनमें नीहित सांस्कृतिक तत्वों की शैक्षिक उपयोगिता का अध्ययन कर इसके महत्व को जान सकेंगें।

शोध समस्या से उभरने वाले प्रश्न

राजस्थानी संस्कृति के रीति–रिवाजों तथा उनमें नीहित सांस्कृतिक तत्वों की शैक्षिक उपयोगिता क्या है?

अध्ययन के उद्देश्य

राजस्थानी संस्कृति के रीति–रिवाजों तथा उनमें नीहित सांस्कृतिक तत्वों की शैक्षिक उपयोगिता का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में शोध का स्वरूप वर्णनात्मक रखा गया है। तथा शोध की विधि वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

राजस्थानी संस्कृति में प्रचलित स्थानीय रीति–रिवाजों की वर्तमान शैक्षिक उपयोगिता

गर्भाधान संस्कार

उत्तम संतान प्राप्त करने के लिये प्रथम गर्भाधान संस्कार करना होता है। पितृ ऋण से उऋण होने के लिये ही संतान– उत्पादनार्थ यह संस्कार किया जाता है। इस संस्कार को सम्पन्न करने से गर्भ से संबंधित मलिनता आदि दोश दूर हो जाते है। जिससे उत्तम संतान की प्राप्ती होती है।

गर्भाधान संस्कार की शैक्षिक उपयोगिता

सृष्टी पर जीवन का प्रारम्भ गर्भाधान संस्कार से ही होता है। गर्भाधान एक प्राकृतिक प्रक्रिया है इस प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाने व शुभ परिणाम् कारक बनाने वाली विधि गर्भाधान संस्कार है। समाज में विवाह के पश्चात् युगल दम्पति को गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने व सन्तान उत्पन्न करने की मान्यता दी जाती है। गर्भाधान संस्कार वंश वृद्धि, पितृ, ऋण से मुक्ति एवं पुत्र प्राप्ति होती है।

पुंसवन संस्कार

गर्भाधान का निश्चय हो जाने के पश्चातृ गर्भस्थ शिशु को पुसंवन संस्कार के द्वारा अभिशिक्त किया जाता है। गर्भस्थ शिशु के समुचित विकास के लिए गर्भिणी का यह संस्कार किया जाता है। पुंसवन संस्कार के लिए गर्भ से दूसरे और तीसरे माह को शुभ बताया गया है।

पुंसवन संस्कार की शैक्षिक उपयोगिता

पुंसवन संस्कार के द्वारा माता को आत्मिक रूप से सबल बनाया जाता है। इस संस्कार का गर्भिणी पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। उसे ऐसा लगता है कि उसे मनोनुकूल सन्तति प्राप्त होगी। गर्भिणी को प्रसन्नता होने से गर्भस्थ शिशु पर सुप्रभाव पड़ता है।

आठवा पूजन/सीमन्तोन्नयन संस्कार

यह संस्कार गर्भिणी स्त्री के मन को सन्तुष्ट करने शरीर के आरोग्य एवं गर्भ की स्थिरता और उत्कृष्टता के लिए किया जाता है। इस समय गर्भस्थ शिशु में मानस या अन्तःकरण का उद्भव हो रहा होता है। इस अवसर पर गर्भिणी का जैसा स्वास्थ्य और मानसिकता होगी शिशु का शारीरिक बौद्धिक और मानसिक परिवेश उसी प्रकार का होगा।

आठवा पूजन /सीमन्तोन्नयन संस्कार की शैक्षिक उपयोगिता

सीमन्तोन्नयन संस्कार से गर्भवती स्त्री को मानसिक बल व सकारात्मक विचारों को बढाने का प्रयास किया जाता है। शिशु के विकास के साथ माता के हृदय में नई नई इच्छाएं पैदा होती है। शिशु का मानसिक विकास में इन इच्छाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस समय गर्भस्थ शिशु शिक्षण योग्य बनने लगता है। उसके मन और बुद्धि में नई चेतना शक्ति जाग्रत होने लगती है। उसके मन में प्रभावशाली अच्छे संस्कार डालने का यह श्रेष्ठ समय होता है।

जातकर्म संस्कार

जातकर्म संस्कार का प्राकृतिक, आधार, प्रसव–जन्य, शारीरिक आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों में निहित था। "आदिमानव का विस्मय, प्राकृत तथा अतिप्राकृत शक्तियों से भय और चिन्ता का भाव कालक्रम से माता और शिशु की रक्षा तथा शुद्धि के सांस्कृतिक उपायों तथा आकांक्षाओं का उद्देश्य भी समाहित हो गया।"[2]

> "इसमें पिता अपनी अंगुली या सोने–चाँदी की शलाका से शिशु को शहद और घी चटाता है।"[3]

जातकर्म संस्कार की शैक्षिक उपयोगिता

जातकर्म संस्कार से गर्भ जन्य दोष नष्ट हो जाता है। जातकर्म संस्कार में वैदिक मंत्रों द्वारा सन्तान के दीर्घ जीवी और मेधावी होने की मंगल कामना की जाती है। मनुष्य शरीर पाकर जीव उचित पुरूषार्थ द्वारा ब्रह्म हो सकता है।[4] "सूक्ष्म शरीर का संस्कार हुए

बिना नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का स्तर ऊँचा नहीं हो सकता। आहार–विहार के प्रभाव नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार उन्नति का एक प्रतिबंधक सहज ही हट जाता है।"[5]

जन्मोत्सव

बच्चे के जन्म पर जन्म–घुट्टी परिवार की किसी बड़ी–बूढ़ी स्त्री से दिलाते हैं। यदि शिशु लड़का होता है तो घर तथा समाज की महिलाओं द्वारा कांसी की थाली बजाई जाती है। पंडित से जन्म का सही समय बताकर उसके शुभ–अशुभ लक्षणों को ज्ञात किया जाता है। मिठाई बांटी जाती है तथा मंगलगीत गाये जाते हैं।

जन्मोत्सव की शैक्षिक उपयोगिता

मनुष्य के जीवन में ग्रह नक्षत्रों का बड़ा प्रभाव माना जाता है। बच्चे के जन्म के सही समय के आधार पर उस वक्त के शुभ–अशुभ लक्षणों को ज्ञात किया जाता है। किसी प्रकार के ग्रह–नक्षत्र दोष होने पर उसको दूर करने का विधान किया जाता है। इसके साथ साथ राजस्थानी संस्कृति में जन्म–घुट्टी का भी बड़ा महत्व होता है। कहा जाता है कि जन्म–घुट्टी पिलाने वाले के सारे गुण बच्चे द्वारा ग्रहण कर लिया जाता है।

छठ पूजन

बच्चे के जन्म के छठे दिन यह पूजा की जाती है। पूजा के दिन बच्चे की मां नहा धोकर तैयार होती है और नये कपड़े पहनकर तथा बच्चे को भी नहलाकर नये कपड़े पहनाती है और उस रात्रि को बच्चे के बिस्तर के पास एक खाली सफेद पेपर व एक लाल पेन या कुमकुम व मोरपंख रखा जाता है। इसके पिच्छे मान्यता है कि इस दिन विधाता माता व बच्चे के कर्म के लेख लिखती है।

छठ पूजा की शैक्षिक उपयोगिता

छठ पूजा के पिछे मान्यता है कि इस दिन विधाता माता व बच्चे के कर्म के लेख लिखती है। इस पूजा की सम्पन्नता से मातृ पितृज शारीरिक दोषों का शमन होता है। संतान के दीर्घजीवी और मेघावी होने के मंगल कामना की जाती है। इस प्रक्रिया से शिशु के अन्तः करण पर एक संस्कार पड़ता है। इस संस्कार के बल से बालक दीर्घजीवन प्राप्त करता है। आज समाज अल्पायु होता जा रहा है। इस संस्कार को सम्पन्न करवाने से बालक पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

नामकरण संस्कार

नामकरण संस्कार के दिन सर्वप्रथम शुद्धिकरण किया जाता है। घर को शुद्ध कर माता को स्नान करवाकर नवीन वस्त्र धारण करवाये जाते है। घर के मुख्य द्वार पर आम, जामुन व नीम के पत्तों की बन्दरवार सजायी जाती है। इससे बाहर का वातावरण घर की शुद्धि पर प्रभाव न कर सके। बच्चे को नहलाकर शुभ वस्त्र एवं मंगल तिलक धारण कर पवित्र आसन पर बैठकर आचमन आदि के उपरान्त गौरी–गणेश, नवग्रह तथा पंचदेवों का पूजन और हवन किया जाता है।

नामकरण संस्कार की शैक्षिक उपयोगिता

अतिप्राचीन काल में ही व्यक्तिगत नामों के महत्त्व का अनुभव किया तथा नामकरण की प्रथा को धार्मिक संस्कार में परिणत कर दिया। नामकरण संस्कार का प्रयोजन बालक को समाज से और समाज को नवजात शिशु से परिचय कराना है। जो नाम बालक का रखा जाता है उसके पीछे भावना की ऐसी स्फुरणा रहनी चाहिए। जिससे समाज द्वारा उसे श्रेष्ठता से सम्बद्ध माना जाए।

निष्क्रमण संस्कार

शिशु जन्म के पश्चात् प्रसूति गृह से पूजास्थल में जाता है किन्तु घर के बाहर एकदम से उसे नहीं ले जाया जाता। सम्भवतः नौ महीने तक गर्भ में रहने के बाद बाह्य वातावरण में अकस्मात् निकलना उसके लिए प्रतिकूल भी हो सकता है। इसलिए शुभ नक्षत्र एवं शुभ मुहूर्त्त देखकर जन्म के कुछ समय पश्चात् ही उसे बाहर ले जाया जाता है। इस प्रकार विधि विधान से शिशु को घर से बाहर लाना ही निष्क्रमण संस्कार कहलाता है।

निष्क्रमण संस्कार की शैक्षिक उपयोगिता

"निष्क्रमण का अर्थ है बाहर निकालना। बच्चे को पहली बार घर से बाहर निकाला जाता है तो उसे समय निष्क्रमण संस्कार किया जाता है।"[7] निष्क्रमण संस्कार शिशु को प्रथम बार घर से बाहर ले जाया जाता है एवं समाज से सम्पर्क करवाया जाता है, जिससे बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास हो पाये। बालक को प्रकृति के सुन्दर दृश्यों को दिखाया जाता है जिससे बालक को प्रकृति की सुषमा का ज्ञान हो सकें। जन्म के चौथे मास में निष्क्रमण संस्कार होता है। जब बच्चे का ज्ञान और इन्द्रियां सशक्त होकर धूप, वायु आदि को सहने योग्य बन जाती है। सूर्य, चन्द्र के दर्शन करना इस संस्कार की मुख्य प्रक्रिया है।

जलवा पूजन

बच्चा पैदा होने के महीने सवा महिने बाद अच्छा वार देखकर माँ जलवा पूजन करती है। जब तक जलवा पूजन नहीं होता है, तब तक स्त्री न तो पीने के पानी के मटके के पास जाती है और न ही रसोई में प्रवेश करती है।

जलवा पूजन की शैक्षिक उपयोगिता

जलवा पूजन जीवन में शुद्वता, अनुशासन, तथा जल के महत्व को दर्शाता है। बिना शुद्वता के किसी कार्य को न करने की प्रेरणा देता है। शुद्वता के साथ ही पानी के मटके के पास जाना, या रसोई में प्रवेश का महत्व जलवा पूजन की परम्परा में दिखाई देता है।

दशोटन

बालक जन्म से लेकर 5–6 माह तक माता के दुध पर ही निर्भर रहता है। एक निश्चित आयु के पश्चात् शिशु को पोष्टिक भोजन की आवश्यकता पड़ती है। यही भोजन जब शिशु को प्रथम बार खिलाया जाता है तो इसे अन्नप्राशन संस्कार भी कहा जाता है।

दशोटन की शैक्षिक उपयोगिता

अन्न का मनुष्य शरीर से गहरा सम्बन्ध है। शिशु की आयु छः माह हो जाने पर उसकी शारीरिक आवश्यकताएँ बढ़ जाती है इसके लिए उसे माता के दुध के अतिरिक्त भी आहार की आवश्यकता होती है। इस संस्कार का महत्त्व इसलिए भी है कि शिशु सुसंस्कारी अन्न ग्रहण करे। शुद्ध एवं सात्त्विक, पौष्टिक अन्न से ही शरीर व मन स्वस्थ रहते है।

मूंडन/झडूला या चूडाकरण संस्कार

मानव शरीर की समस्त प्रवृत्तियों का केन्द्र मस्तिष्क है। अतः मस्तिष्क का विकसित परिष्कृत और व्यवस्थित होना आवश्यक है। इसके लिए राजस्थानी संस्कृति में मूंडन/झडूला या चूडाकरण का विधान किया गया।

चूड़ाकरण संस्कार की शैक्षिक उपयोगिता

चूड़ाकरण संस्कार बल, बुद्धि, आयु व तेज की वृद्धि के लिये किया जाने वाला संस्कार है। चूड़ाकरण में पहली बार शिशु के सिर के बालों को हटाया जाता है। ये वो केश होते है जो बालक को गर्भावस्था में प्राप्त होते है। इसलिए इन्हें मुंडवा कर केवल शिखा रखी जाती है।

विवाह से सम्बन्धित रीति–रिवाज

इसमें सगाई, टीका, लग्न, सिंझारी, कुमकुम पत्रिका, इकताई, पाट बैठना/बान बैठना, बरी पड़ला, विनायक पूजन, कांकन डोर, बिन्दोली, मारत या रातिजोगा, बारात, सामेला, तोरण मारना, हथलेवा, फेरे, कन्यादान, कन्यावल, पहरावणी, गौना/मुकलावा व बढार आदि।

सगाई

इसे सगपण, सम्बंध, मंगनी या रिष्ता तय करना भी कहते हैं। राजस्थानी संस्कृति में जाति में भी सम गोत्र में सगाई नहीं होती है। सगाई करते वक्त मां, बाप, दादी तथा नानी की गोत्र टालते हैं। अच्छा वार देखकर सगाई की जाती है। सगाई के वक्त मोहल्ले के लोगों या बस्ती के लोगों को बुलाया जाता है। इन सबके सामने सगाई की रस्म होती है।

शैक्षिक उपयोगिता– सगाई करते वक्त मां, बाप, दादी तथा नानी की गोत्र टालते हैं। जिससे जाति की जन्मजात विशिष्टताओं की रक्षा होती है। जेनेटिक प्रभाव बना रहता है। रिश्ते तय करने में सामाजिक मान मर्यादाओं का भी विशिष्ट महत्व है। सगाई के वक्त मोहल्ले के लोगों या बस्ती के लोगों को बुलाया जाना रिश्ते पर सामाजिक मोहर लगाना होता है। इन सबके सामने सगाई की रस्म होती है। सगाई द्वारा लड़के–लड़की को भावी जीवन साथी के रूप में सामाजिक मान्यता प्रदान की जाती है।

सिंझारी / *रीत*

सगाई के चार–छः महिने बाद बेटी का बाप बेटे के बाप से रीत मंगवाता है। जिसमें लड़की के जेवर तथा कपड़े, चूड़ियां व रिबन वगेरह मंगवा लेते हैं।

शैक्षिक उपयोगिता– सिंझारी/रीत परम्परा दो परिवारों के बीच आपसी सम्बन्धों की प्रगाढता को दर्शाती है। साथ ही विवाह से पूर्व भी आपसी विश्वास को दर्शाती है।

टीका/लग्न

लड़का–लड़की विवाह योग्य हो जाते हैं तो बात–चीत के जरिये विवाह का अनुमानित समय तय कर लिया जाता है। पण्डित से विवाह का लग्न निकलवाया जाता है। लड़की का बाप पण्डित से लग्न लिखवाता है जिसमें एक कागज पर विवाह की तिथि तथा समय आदि लिखा जाता है। बेटे का बाप अपने नजदीकि रिश्तेदारों या मौहल्ले वालों को इकट्ठा कर लग्न ले लेता है। लड़के का बाप लग्न लानेवाले को अपनी इच्छानुसार भेट देकर वापस रवाना कर देता है।

शैक्षिक उपयोगिता

विवाह का अनुमानित समय तय करना तथा परपराओं के साथ आगे बढने के महत्व को लगन परम्परा दर्शाती है। समय का उचित मार्गदर्शन पण्डित से तय करवाना हिन्दू संस्कृति का एक हिस्सा रहा है। जिसमें एक कागज पर विवाह की तिथि तथा समय आदि लिखित में होता है।

पाट बिठाना

लग्न लाने के बाद लड़का और लड़की को विवाह के पण्डित द्वारा लग्न में लिखे गये दिन पाट या बजोट बिठाते हैं। इस रस्म को बजोट बहठाना भी कहते हैं। मारवाड़ में बान बिठाना भी कहते हैं। अच्छा वार देखकर पाट बिठाया जाता है। पाट बिठाते हैं तब मौहल्ले के आदमियों और औरतों को बुलाते हैं। औरतें गीत गाती हैं।

शैक्षिक उपयोगिता– पाट पर बैठाना विवाह परम्परा को निभाने की पुष्टि के साथ साथ खुषियां मनाने की शुरूआत होती है। लड़का–लड़की जिसकी शादी होनी होती है उसको पाट पर बैठाना, तिलक करना, कटोरी में घी गुड़ डालकर पाट पर बैठे को खिलाना, गले में फूलों या रेषम की माला पहिनाना हाथ में कटारी या तलवार दी जाती है जो फेरे होने तक उनके पास रखना ये इस बात को प्रमाणित करती है कि लड़का या लड़की अब इस परम्परा को निभाने में सक्षम है तथा भविष्य की पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन के लिए तैयार है।

विनायक पूजा

यह रिवाज पाट बिठाई के दिन नही होता है। लग्न में लिखे अनुसार पाट बिठाने के दिन विनायक (गणेश जी) लाते हैं। दूल्हा या दुल्हन के घरवाले मौहल्ले या बस्ती की औरतों को इकट्ठा करते हैं और सभी औरतें गीत गाती हुई कुम्हार के घर विनायक लाने

जाती हैं। कुम्हार मिट्टी का बना हुआ विनायक देता है। जिसके कुमकुम का टीका लगाकर, लाल कपड़ा ओढाकर, गले में कच्चे सूत की माला व षादी का गहना डालकर, थाल में बिठाकर औरतें विनायकजी के गीत गाती हुई घर लाती हैं।

शैक्षिक उपयोगिता– राजस्थानी संस्कृति में प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारम्भ में मगंलकारी देव श्री गणेश का पूजन किया जाता है। विवाह संस्कार भी धार्मिक एवं मांगलिक कार्य है अतः विवाह के दिन वर व वधू के घर गणेश जी का पूजन किया जाता है।

पीठी (उबटन)

जौ का आटा तथा हल्दी मिलाकर पीठी बनाई जाती है। विनायक लाने के बाद हर रोज शाम को दूल्हा तथा दुल्हन के पीठी की जाती है। दुल्हन के पीठी उसकी सहेलियां तथा दूल्हे के अपने साथी पीठी करते हैं। पीठी करते वक्त औरतें गीत गाती रहती हैं।

शैक्षिक उपयोगिता– जौ का आटा तथा हल्दी मिलाकर पीठी बनाई जाती है। जो त्वचा के लिए गुणकारी होती है और निखार भी लाती है। पीठी करने से पहले तैल चढ़ाया जाता है। जिसका आयुर्वेद में शरीर के लिए महत्व बजाया गया है। पीठी से शरीर सुन्दर और कोमल बनता है।

बंदौला (बनोरा)

बन्दौले में दुल्हा–दुल्हन को एक समय का खाना खिलाने से पहले घी जितना पी सकता है पिलाते हैं। खाने में विशेष भोजन बनाते हैं। बंदौला खाने जाते हैं तब दुल्हा या दुल्हन अपने साथ चार–छः आदमी तक ले जाते हैं। पूरे परिवार को खाने पर बुलाते हैं तो इसे सगरी न्यौंता कहते है।

शैक्षिक उपयोगिता— बंदौला परम्परा समाज तथा परिवार के आपसी सम्बन्धों को दर्शाने की परम्परा है। राजस्थानी संस्कृति में सामूहिक परिवार की परम्परा को दर्शाने वाली परम्परा है।

तोरण मारना

तोरण घर के दरवाजे के ठीक उपर लगाया जाता है। जिसे वर तलवार तथा एक लकड़ी से इसे मारता है। ऊँट पर बैठ कर तोरण वांदने का रिवाज एक मात्र रैबारी समाज में ही होता है।

शैक्षिक उपयोगिता– तोरण मारने का उद्देष्य अनिष्टकारी शक्तियों के दमन के प्रतिकार्थ है।

बरात

दूल्हे का बाप बरात में चलने का व्यक्तिगत रूप से निवेदन करता है। फेरे के रोज बरात चढ़ती है,

शैक्षिक उपयोगिता– बरात रवाना होने से पहले हलवा, लापसी या विशेष भोजन खिलाया जाता है। जो दर्शाता है कि अब ये परम्परा माता पिता की ना होकर समूचे बरातियों की है। सम्पूर्ण समाज द्वारा दुल्हन हो विवाह करके घर लाने की जिम्मेदारी को दर्शाती यह परम्परा राजस्थानकी सांस्कृतिक विरासत की विशालता को दर्शाती है।

पडला

दुल्हन के लिए लाए जाने वाले कपड़ों व श्रृँगार को पडला कहते हैं। पडला दुल्हन के घर पहुँचते ही दुल्हन को तैयार करते हैं। पीठी करके स्नान कराया जाता है। दुल्हन पडले में लाये कपड़े पहन कर श्रृंगार करती है। तैयार होकर विनायक जी के सामने बैठ जाती है। मोड़ बांध दिया जाता है।

शैक्षिक उपयोगिता–पडला एक बेटी के पिता को दुल्हे के घर वालों द्वारा उसकी बेटी की पूरी जिम्मेदारी व देख रेख की सक्षमता का आश्वासन प्रदान करती है साथ ही दुल्हन को परिवार के हिस्से के रूप में समझने की भावना को दर्शाती है।

फेरे

दुल्हन को दुल्हे के बायीं तरफ बैठाया जाता है। चंवरी में हवन कुण्ड बना हुआ होता है। पण्डित हवन करता है। दूल्हे का हाथ उपर तथा दुल्हन का हाथ नीचे रखा जाता है। फिर दूल्हा–दुल्हन को खड़ा कर पण्डित फेरे दिलवाता है। औरतें फेरों के गीत गाती हैं।

शैक्षिक उपयोगिता–भारतीय संस्कृति में विवाह संस्कार पाश्चात्य सभ्यता के विपरीत एक आध्यात्मिक बन्धन है। विवाह–संस्कार के द्वारा दो प्राणी स्वेच्छा से अग्नि को साक्षी मानकर अपने–आपको पवित्र सामाजिक बन्धन में बांधकर समाज के सामने पारस्परिक सहयोग का विमल आदर्श प्रस्तुत करते है। 'हवन वेदी में आम, चन्दन की लकडियां, घी चावल व हवन सामग्री डाली जाती है जिससे आसपास का वातावरण शुद्ध होता है।[8]

गोना

इसे ओणा या मुकलावा भी कहते हैं। विवाह के एक साल बाद गोना किया जाता है । लड़का–लड़की बड़ी हो तो साल भर से भी पहले गोना कर दिया जाता है। गोना में लड़की के ससुराल वाले लड़की के घर अपने भाइयों व कुटुम्बियों के साथ लड़की को लेने आते हैं। गोना लेने शाम को ही आते हैं।

शैक्षिक उपयोगिता– विवाह के कुछ समय बाद गोना किया जाता है। गोना परम्परा इस बात को प्रमाणित करती है कि विवाहित लड़की अब शारीरिक व मानसिक रूप से दाम्पत्य जीवन में आने में सक्षम है।

मायरा

इस रस्म को मामेरा भी कहते हैं। भाई अपनी बहिन की लड़की या लड़के के विवाह के मौके पर मायरा लाता है। बहिन के घर सबको बिठा कर भाई ओढावणी करता तथा एक थाली में पैसे तथा जेवर रखता है। पैसों व जेवर सहित थाल बहिन के परिवार वालों को सौंप दिया जाता है। बहिन के सास, ससुर तथा उसके परिवार को कपड़े ओढाये जाते हैं।

शैक्षिक उपयोगिता– मायरा भाई बहन के प्रेम तथा रिश्तों की प्रगाढता को दर्शाता है। एक भाई की बहन के प्रति जिम्मेदारियों को दर्शाने वाला रिवाज है।

भद्दर

दाह संस्कार के वक्त मरे हुए व्यक्ति के पुत्रों के द्वारा मूंडन करवाया जाता है।

शैक्षिक उपयोगिता– भरा–पूरा परिवार तथा मृत आत्मा के प्रति श्रृद्धा को प्रकट करता है।

बैकुंटी

मृतक को श्मशान तक ले जाने की शैया को सजाकर अंतिम यात्रा निकालना।

शैक्षिक उपयोगिता– मृतात्मा के प्रति सम्मान को प्रकट करता है।

बखेर/उछाल

अंतिम यात्रा के वक्त पैसे एवं कोडियां उछाली जाती हैं।

शैक्षिक उपयोगिता– मानव जीवन में धन तथा कर्म के महत्व दर्शाता है।

अंत्येष्टि

मृतक का अंतिम संस्कार करने की रस्म हैं।

शैक्षिक उपयोगिता– मानव जीवन के नश्वर होने की सत्यता को दर्शाता है। अन्तिम संस्कार परलोक सुधार के लिये किया जाता है।

निष्कर्ष

राजस्थानी संस्कृति में रीति–रिवाज मानव जीवन की अमूल्य निधि होती है। रीति–रिवाजों से ही उन सभी संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे मानव अपने सामाजिक जीवन के आदर्शो को निर्माण करता है। राजस्थानी संस्कृति में रीति–रिवाज मनुष्य को मानव बनाती है। यह मनुष्य के आचरण को नियमित करती है तथा उसे समूह जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार करते है। मानव कहलाने के लिए व्यक्ति को राजस्थानी संस्कृति में रीति–रिवाजों धारा में प्रवाहित होना पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- भट्ट राजेंद्र शंकर (2000) राजस्थान का सांस्कृतिक प्रवाह, पंचशील प्रकाशन, जयपुर.
- पाण्डेय, डॉ. राजबली, "हिन्दू संस्कार (1995)", चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी.
- शास्त्री, देवर्शि कलानाथ, "पाथेयकण, संस्कार विशेषांक (दिसम्बर 2015)", पाथेयकण संस्थान, जयपुर.
- कालवा, सूरत सिंह, "सोलह संस्कार और संघ (1999)", संघशक्ति प्रकाशन, जयपुर.
- सरस्वती, श्री ब्रह्मानन्द "जातकर्म–संस्कार का महत्त्व (आलेख)", (कल्याण संस्कार अंक 2006), गीता प्रेस गोरखपुर.
- सिंह, चन्द्रमणि (2000) राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, पापुलर प्रिंटर्स, जयपुर.
- शर्मा, धर्मपाल (1999) मेवाड़ संस्कृति एवं परम्परा, प्रताप शोध प्रतिष्ठान उदयपुर.

Corresponding Author

*** सुरेन्द्र सिंह** *(शोधार्थी)*
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
****डॉ. रमा शर्मा,** *शोध निर्देशक*
सहायक आचार्य (शिक्षा)
बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई) गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर, (राजस्थान)
Email- surendrasingh8581@gmail.com, Mobile-9928858120